जल पर भारी प्रदूषण और पर्यावरण

हर्षकुमार 'हर्ष'

हमने जल–उपलब्ध करवाने वाली नदियों को अधिमान दिया, माता स्वरूप सम्मान दिया है यथा गंगा मैया, यमुना मैया कह कर। इनका महत्व तभी है, जब इनमें स्वच्छ पानी है। हमने सदा जल भरी नदियों की आरती उतारी, दीप दान किया। इनके किनारों पर मंदिरों का निर्माण करके विभिन्न मेलों का आयोजन किया। जल को इतना सम्मान दिया कि हम रात में शयन पूर्व अपने सिरहाने जल का लोटा रख कर सोते हैं, ताकि रात में कभी किसी का दम उखड़ने लगे तो उसे तुरंत जल उपलब्ध किया जा सके, जल प्राण दायक होता है न।

देश स्वतंत्र हुआ तो हम तैंतीस करोड़ थे। तब हम देवी-देवताओं के समकक्ष जाने जाते थे-'तैंतीस करोड़ देवी-देवता'। मात्र 70 वर्षों के उपरांत आज हम एक अरब तैंतीस करोड़ हो चुके हैं। इसीलिए देवी-देवता शब्द भी काफूर होकर रह गया। तब जल की कोई कमी न थी और नहीं कोई मारामारी। हमारी संस्कृति ने मानव और सृष्टि को पांच तत्वों धरती, आकाश, जल, वायु और अग्नि से निर्मित मान कर इनकी पूजा की है। प्रमुख विद्वानों कवियों ने भी जल अर्थात् पानी को महत्व दिया-'पवन गुरू पानी पिता माता धरती महत्व' गुरू नानकदेव। हिन्दू धर्म के ज्ञानदाता मुख्य ग्रंथ वेदों में भी सूर्य, अग्नि, वायु, इंद्र इत्यादि देवताओं की महिमा है। इंद्रदेव को वर्षा (जल) का प्रतीक माना जाता है। जल के इस देवता का वर्णन हमारे आदि ग्रंथों में प्रायः ही देखने को मिलता है। हमने जल-उपलब्ध करवाने वाली नदियों को अधिमान दिया, माता स्वरूप सम्मान दिया है यथा गंगा मैया, यमुना मैया कह कर। इनका महत्व तभी है, जब इनमें स्वच्छ पानी है। हमने सदा जल भरी नदियों की आरती उतारी, दीप दान किया। इनके किनारों पर मंदिरों का निर्माण करके विभिन्न मेलों का आयोजन किया। जल को इतना सम्मान दिया कि हम रात में शयन पूर्व अपने सिरहाने जल का लोटा रख कर सोते हैं, ताकि रात में कभी किसी का दम उखड़ने लगे तो उसे तुरंत जल उपलब्ध किया जा सके, जल प्राण दायक होता है न।

समय ने करवट ली, हम आबादी बढ़ाते रहे, जल स्रोतों को ध्वस्त करके, रहने के लिए घर बनाते रहे। बचे हुए जल-स्रोतों कुओं, तालाबों, जोहड़ों इत्यादि की भराई करने में रहे, नदियों में विभिन्न प्रकार का कचरा भरने लगे। इतना ही नहीं, यहां तक कि हमने नदियों में सीवर बहाने आरम्भ कर दिए। हजारों लाखों कारखानों के क्षारीय, विषैले तत्व, तेजाबी, गंधक, शोरा मिले तीव्र गंधयुक्त दूषित द्रव्यों को नदियों में डाल कर निजी सुविधाओं का लाभ उठाने में लगे रहे

हैं। जिस जल को हम देवता स्वरूप मानते थे उसे राक्षस रूप भी हमने स्वयं ही तो दिया है। नदियों के

गंगा को प्रदूषित करता उद्योगों का अपशिष्ट जल।

तटों के भीतर हमने घरों-गलियों का दूषित कूड़ा-करकट भरने से भी कभी संकोच नहीं किया है।

इस सब का प्रतिफल भी तो हमें मिलना ही था, सो मिला। धरती के भीतर का जल संक्रामक हो आया। कई प्रकार के घातक, असहय और संक्रमिक रोग, अप्रत्याशित ज्वर इत्यादि फैलने लगे हैं। पानी के अंधाधुंध दोहन से धरती में पानी बहुत गहरे उतर गया। अरबों रूपयों से घर-घर में जल-शुद्धिकरण के सन्यंत्र लगाने पड़े। वो जल जिसका प्याऊ बिठा कर निशुल्क वितरण किया जाता था, आज बोतल-बंद करके दूध के भाव बेचा-खरीदा जाता है। इस खरीद को हम संकोच नहीं बल्कि गर्व से प्रयोग करते हैं। आज हमारी माताएं, बहुएं, बेटियां जल की तलाश में कोसों दूर जाकर भी, जो जैसा मिले शुद्ध-अशुद्ध जल भर लाने को विवश हैं। यही पानी जो कभी धरती में दो-चार फुट की गहराई में प्राप्त हो जाता था, आज दो सौ फुट की गहराई में भी मुश्किल से मिलता है, वो भी अशुद्ध।

इसका मुख्य कारण जहां जनसंख्या का बेहद बढ़ जाना है वहीं विकास के नाम पर लगे नलकूपों-टोंटियों से इसे व्यर्थ बहाया जाना भी है। हमारे नित्य कर्मों में, हाथ-मुंह धोने में, घरों के लॉन इत्यादि के रख-रखाव में पानी का बेतहाशा उपयोग होने लगा। जल से भरे बादलों का रास्ता रोकने वाले पेड़ों को काट दिया गया। पर्वतों के सीने छलनी कर दिए गए। धनोपार्जन की लोलुपता में हम किसान बन कर धान की बुवाई अधिक करने लगे। आखिर सब की एक सीमा तो होती ही है, जिसे मर्यादा कहते हैं।

पर्यावरण असंतुलन के कारण भी वर्षा में कमी आई है। जल संसाधनों का दोहन करना तो कोई हम से सीखे। हमने प्रायः अपने निजी स्वार्थों के लिए प्राकृतिक स्रोतों का दोहन किया है। पर्यावरण के दूषित होने से जलजीव मर रहे हैं। अपने धार्मिक अंधविश्वासों के चलते भी हम स्वयं अपनी अमृत के समान नदियों को गंदा करते रहे हैं। खेतों में गंदा पानी जाने से मिट्टी की उपजाऊ क्षमता कम होने लगी है, तो दूसरी ओर वाहनों का असंख्य बढ़ जाना और उन में से उत्सर्जित होने वाले धुएं से वातावरण विषैला हो गया। सांस लेने में परेशानी होने लगी है। महानगरों में विशेष रूप से जन साधारण का दम घुटने लगा है। सांस लेने से कार्बन और सीसा की मात्रा हमारे शरीर में बढ़ती जा रही है। प्लास्टिक का चलन और उसका पुनः प्रयोग होने से

रेडियो धर्मिता से नष्ट होती पक्षियों की प्रजातियां।

जहरीला धुआं फैलता है। पेड़-पौधों, सब्जियों-फलों को स्वच्छ पानी, प्रकाश, वायु इत्यादि न मिलने से उन में पौष्टिक तत्वों की कमी आई है। रासायनिक खादों और हानिकारक केमीकल के प्रयोग से हमारा भोजन प्रभावित होता जा रहा है। खेद है कि हम सब इतना अनर्थ होते करते भी स्वार्थी बने रहे हैं।

मोबाइल फोन, नेट के प्रयोग हेतु बढ़ रहे टावरों की रेडियो धर्मिता इतनी बढ़ गई है कि बहुत से पक्षियों की प्रजातियां नष्ट हो गई हैं, जिन से वातावरण संतुलन दिन-प्रतिदिन बिगड़ रहा है अतः वायु मण्डल के प्रभावित होने से स्पष्ट है कि आज जल ही नहीं अपितु प्रकृति के अन्य तत्व जैसे धरती, आकाश और अग्नि भी प्रदूषण से बच नहीं पाए हैं।

पर्यावरण का अत्याधिक असंतुलित होना, पूरे विश्व की समस्या बन गई। प्रदूषित वातावरण जब सिर चढ़कर बोलने लगा तो यूनाइटेड नेशन को भी हरकत मे आना पड़ा। 5 मई 1972 से विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का प्रस्ताव यू.एन.ओ. की जनरल असेंबली में पारित किया गया। आज भी पूरे विश्व की जनता इनती सजग नहीं हो पाई है। वर्ष भर में एक दिन के लिए पर्यावरण दिवस मनाना कम पड़ रहा है। प्रत्येक वर्ष करोड़ों अरबों पेड़ लगाए जाते हैं, तो अगले ही दिन वे बिना देख-भाल के उखड़े हुए अथवा सूखे हुए मिलते हैं।

वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग का सन्देश बराबर दे रहे हैं। हम लोग हैं कि उनकी चेतावनी से विमुख हुए घूम रहे हैं। प्रतिदिन दूषित भोजन और जल के सेवन से विश्व भर के लोगों के मरने के समाचार भी प्रसारित होते हैं। पानी की प्राप्ति लोगों में जीवन-मरण का प्रश्न बनता जा रहा है। रोजाना मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा क्या-क्या नहीं हो रहा। विश्व भर में बहुत से देशों के लोग खाली बर्तन लिए पानी के इंतजार में बैठे रहते हैं।

प्रिय पाठको! वो दिन दूर नहीं जब हम अपने काम धंधे छोड़ कर पानी के लिए भागते दिखाई देंगे। धरती की सोना उपजने वाली उपजाऊ मिट्टी सूखी बालू में परिवर्तित हो जाएगी। अतः आओ! आओ हम सब जगें, अपने-अपने समाज को जगाएं। अपनी दैनिक आवश्यकताओं को सीमित करें। स्वच्छता की ओर बढ़ें। पंच तत्वों की रक्षा करें, जिन में जल सर्वोपरि हो।।

पर्यावरण संभालो भैया, आबादी को टालो भैया।
फिर से चिड़िया गिद्द गुटारें, आसमान में पालो भैया।।

आज हमारी माताएं, बहुएं, बेटियां जल की तलाश में कोसों दूर जाकर भी, जो जैसा मिले शुद्ध–अशुद्ध जल भर लाने को विवश हैं। यही पानी जो कभी धरती में दो–चार फुट की गहराई में प्राप्त हो जाता था, आज दो सौ फुट की गहराई में भी मुश्किल से मिलता है, वो भी अशुद्ध।

संपर्क करें:
हर्षकुमार 'हर्ष'
781-एस.एस.टी. नगर, पटियाला (पंजाब)
09464470217, 9316227766